DSE 01
SOCIOLOGY OF RELIGION
ESSENTIAL ELEMENTS OF SECULARISATION

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

लौकिकीकरण के आवश्यक तत्व

Essential Elements of Secularisation

तार्किकता–धर्मनिरपेक्षीकरण का प्रत्यक्ष सम्बन्ध तार्किक दृष्टिकोण से है। इसके अन्तर्गत प्रघटना की व्याख्या विशुद्ध रूप में की जाती है। समाज में जितने भी व्यवहार तर्कहीन हैं, उन्हें इस प्रक्रिया द्वारा नकारा जाता है। इसी कारण इस प्रक्रिया में रूढ़िवादी, अतार्किक, परम्परागत विश्वासों तथा धारणाओं के स्थान पर तार्किक ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है इसमें विभेदीकरण की एक प्रक्रिया भी निहित है जिसके परिणामस्वरूप समाज के विभिन्न आर्थिक, राजनैतिक, कानूनी, नैतिक और सामाजिक आदि अंग एक दूसरे से अधिकाधिक स्वतंत्र होते जाते हैं।

कार्य-कारण सम्बन्ध–धर्मनिरपेक्षीकरण में एक अन्य आवश्यक तत्व 'कार्य कारण' सम्बन्धों का प्रदर्शन है जिसे बुद्धिवाद से भी सम्बोधित किया जाता है। **प्रो. श्रीनिवास** के अनुसार इसके अन्तर्गत पास्परिक विश्वासों और धारणाओं के स्थान पर आधुनिक ज्ञान की स्थापना निहित है। धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया की यह विशेषता है कि यह पारस्परिक विश्वासों तथा तर्कहीन धारणाओं को यथा सम्भव नष्ट करने का प्रयत्न करती है। ऐसे विचार जो पारस्परिक हैं व जिन्हें कार्यकारण सम्बन्ध की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता, वे अपने आप इस प्रक्रिया द्वारा समाप्त हो जाते हैं। यदि उनका अस्तित्व किसी प्रकार बना भी रहता है तो उन्हें उचित जनमत का समर्थन नहीं मिल पाता है।

पवित्रता-अपवित्रता की धारणा—हिन्दू धार्मिक आचरण में पवित्रता और अपवित्रता की धारणा प्रमुख रही है। इसी आधार पर विभिन्न जातियों की दूरी निश्चित होती है। इसी आधार पर जातियों में स्पर्श, विवाह और भोजन निषेध रहे हैं प्रत्येक हिन्दू के सामान्य जीवन में पवित्रता और अपवित्रता की धारणाएँ और कार्य जुड़े हुए हैं। जैसे—दाढ़ी बनाना ब्राह्मणों के लिये अपवित्र कार्य था। पिछले वर्षों में ये धारणाएँ क्षीण हुई हैं पवित्रता के नियमों का स्थान स्वास्थ्य और स्वच्छता के नियमों ने ले लिया। शिक्षित ब्राह्मणों और कट्टरपंथियों ने धीरे-धीरे कट्टर नियमों के स्थान पर बुद्धि संगत व्याख्या को महत्त्व दिया है और पवित्रता को स्वास्थ्य नियमों का दूसरा रूप कहा है। **श्री निवास** ने मैसूर की ब्राह्मण स्त्रियों का उदाहरण दिया है और कहा है कि शिक्षित स्त्रियाँ अपवित्रता के बारे में बहुत अधिक चिंतित नहीं है, परन्तु स्वास्थ्य के नियमों को महत्त्व दे रही हैं। संयुक्त परिवार से अलग होने पर कर्मकाण्डों के इस रूढ़ रूप को छोड़ देती हैं।

लौकिकीकरण की प्रक्रिया ने अनेक कर्मकाण्डों को त्याग दिया गया है। नामकरण और अन्य कर्मकाण्ड जैसे–विधवा का मुण्डन अब प्रचलित नहीं है। संस्कारों को छोड़ने व संक्षिप्त करने की प्रक्रिया के साथ–साथ संस्कारों को मिला भी दिया जाता है जिससे व्यस्त जिन्दगी में समयाभाव को कम किया जा सके। यथा–विवाह के साथ दो दिन पूर्व उपनयन संस्कार भी हो जाता है। विवाह संस्कार भी संक्षिप्त होता जा रहा है। सर्वसंस्कार युक्त ब्राह्मण–विवाह जिसमें पहले 5 से 7 दिन लगते थे अब एक दिन या कुछ घण्टों में ही निपटा देते हैं।

लौकिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप किसी समाज में धर्म के आधार पर सामाजिक व्यवहार में भेदभाव समाप्त किया जाता है।